तथागत भगवान बुद्ध का

महापरिनिर्वाण

(महापरिनिर्वाण माह का निर्धारण)

डॉ. अशोक तपासे

तथागत भगवान बुद्ध का

महापरिनिर्वाण

(तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण माह का निर्धारण)

तिपीटक – सुत्तपिटक – दीघ निकाय

(२) महावग्ग – (३) महापरिनिब्बान सुत्त

चुनिंदा अवतरणों सह स्वैर अनुवाद

संपादक तथा अनुवादक

डॉ. अशोक तपासे

मुल संकल्पना फरवरी २०२३

संशोधन संपन्नता नवंबर २०२५

पुरिस-दम्म प्रकाशन

© हर्षदा तपासे

सावली, भुखंड ८६ - व्यंकटेश नगर, भाग १
पिंप्री (सद्रोद्दीन), तहसील इगतपुरी,
जिला – नाशिक, महाराष्ट्र राज्य

संपर्क

9930 112 113
9969 112 113
8879 112 113

piyadassi.asok@gmail.com

पूर्व पाठ

जब कोई मानव महानता के अंतिम चरण तक पहुँच जाता है तो लोग उसे देवत्व बहाल कर देते है। उसका मानव होना भूल जाते है। उसके जीवन की सामान्यता समझने के बजाय उसके जीवन में कोई असामान्यता ढूंढने का प्रयास करते है। कोई असामान्यता ना भी मिले तो कुछ चमत्कार जैसी रचना भी करते है और उस चमत्कार को लेकर उसे नमस्कार करते है। ऐसे कई मानवी-देव इतिहास ने देखे है।

बुद्ध न तो कोई अवतार थे, न ही कोई देवता, वे केवल एक तत्ववेत्ता मानव थे। मानवी जीवन में वेदना को होना सामान्यतः अनिवार्य है। इस वेदना को सही-सही समझना और उस के निवारण का उपाय भी हो सकता है, इस सच्चाई को समस्त मानव जाती को समझाना यही उन के जीवन का लक्ष रहा था। और इस लक्ष को पूर्ण करने वाले वे एक महान मानव थे। फिर भी उनके पश्चात उनके जीवन से कुछ चमत्कार पूर्ण बाते जोड़कर उन्हें देवत्व बहाल करने का प्रयास हुवा है। ऐसी बातों में से एक यह है की सिद्धार्थ गौतम का जन्म, उनकी संबोधि प्राप्ति तथा उनका निर्वाण एक ही तिथि को हुवा था, जो है “वैशाख पूर्णिमा”। क्या यह बात संपूर्ण सच है, या केवल एक कथा है ?

तथागत बुद्ध के जीवन के अंतिम सफर का वर्णन तिपीटक के सुत्तपिटक में दीघनिकाय के अंतर्गत महावग्ग में **महापरिनिब्बान सुत्त** में विस्तार पूर्वक किया गया है।

आइये, महापरिनिब्बान सुत्त को बारीकी से पढ़ते हुए तथागत बुद्ध के जीवन का अंतिम सफर तथा उनका अंतिम उपदेश भी समझ लेते है।

- डॉ. अशोक तपासे

Indian Society for Buddhist Studies (ISBS)

(Re-registered under the J&K Societies Registration Act, 1860 (Act XXI of 1860) vide no. 723-CSA of 2024)

25th Annual Conference

Hosted By:
Sanchi University of Buddhist-Indic Studies, Sanchi, Madhya Pradesh

November 23-25, 2025

Certificate of Participation

Certified that Prof./Dr./Shri/Smt./Km Ashok Tapase

from Thane- Mumbai

attended the conference and actively participated in its deliberations. He /She presented a research paper entitled

'तथागत बुद्ध के महापरिनिब्बाण की माह'

No TA/DA has been paid to him/her for attending the Conference.

(S. P. Sharma)
President

(Saswati Mutsuddy)
Secretary

(Santosh Priyadarshi)
Local Secretary

याव जीवम्पि चे बालो पण्डितं पायिरुपासति ।
न सो धम्मं विजानाति दब्बी सुपरसं यथा ॥५॥
मुहूत्तमपि चे विञ्ञू पण्डितं पायिरुपासति ।
खिप्पं धम्मं विजानाति जिव्हा सुपरसं यथा ॥६॥

- तथागत बुद्ध
धम्मपद – ५, बालवग्ग

अज्ञानी (मानव) जीवनभर बुद्धिमंताच्या सोबत राहिला तरी ....
त्याला सुसिद्धांत (धम्म) समजत नाही, जसे पळीला आमटीचा स्वाद. (५)
सुजाण माणूस क्षणभरही बुद्धिमंताच्या सोबत राहिला तरी ....
त्याला सुसिद्धांत (धम्म) समजतो, जसे जिभेला आमटीचा स्वाद. (६)

तथागत भगवान बुद्ध के मानवी जीवन का अंतिम सफर

तथागत भगवान बुद्ध के मानवी जीवन के **अंतिम सफर** का वर्णन तिपीटक के सुत्तपिटक में प्रथम निकाय दीघनिकाय में दूसरे वग्ग महावग्गपाळि में तीसरे स्थान पर आने वाले महापरिनिब्बान सुत्त में किया गया है।

इसकी शुरवात .... राजगृह

एवं मे सुतं - एकं समयं भगवा राजगहे विहरति गिज्झकूटे पब्बते। तेन खो पन समयेन राजा मागधो अजातसत्तु वेदेहिपुत्तो वज्जी अभियातुकामो होति। ....

इस से यह ज्ञात होता है की तथागत भगवान बुद्ध के मानवी जीवन का **अंतिम सफर** राजगृह (अब राजगीर) के गृधकुट पहाडी से शुरू होता है। उस समय वहाँ पर वैदेहीपुत्र अजातशत्रु राजा है। अजातशत्रु के राज्य के करीब वैशाली में बसें वज्जि वंश के लोगोंको लेकर राजा अजातशत्रु को कुछ डर सा लगता है और इसके कारण वह वज्जियों को खत्म करना चाहता है। इस के लिये वह अपने मंत्री वस्सकार को तथागत से सलाह के हेतु भेजता है। तथागत इस पर वज्जियोंपर हमला न करने की सलाह देते है, क्यों की वज्जि प्रजाजन धम्म का उत्तम अनुसरण करते है। वस्सकार के वापस जाने पर तथागत अपने संघ को पतन को रोकने के सात उपाय के विषय को लेकर धम्म उपदेश देते है। सात उपायों की शृंखला तीन बार होती है तथा अंत में छः उपाय बताकर धम्मदेसना पूर्ण होती है।

इसके बाद तथागत भन्ते आनंद से अंबालट्ठीका गाँव की ओर चलने को कहते है।

अथ खो भगवा राजगहे यथाभिरन्तं विहरित्वा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि "आयामानन्द, येन अम्बलट्ठिका तेनुपसङ्कमिस्सामा"ति।

इस गाँव में रहते हूवे तथागत भिक्षु संघ को शील, समाधि और प्रज्ञा के विषय में धम्मदेसना देते है।

तत्रापि सुदं भगवा अम्बलट्ठिकायं विहरन्तो राजागारके एतदेव बहुलं भिक्खूनं धम्मिं कथं करोति – "इति सीलं इति समाधि इति पञ्ञा। सीलपरिभावितो समाधि महप्फलो होति महानिसंसो। समाधिपरिभाविता पञ्ञा महप्फला होति महानिसंसा।

पञ्ञापरिभावितं चित्तं सम्मदेव आसवेहि विमुच्चति, सेय्यथिदं – कामासवा, भवासवा, अविज्जासवा’’ति।

फिर तथागत भन्ते आनंद से नालंदा चलने को कहते है।

अथ खो भगवा अम्बलट्ठिकायं यथाभिरन्तं विहरित्वा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि – “आयामानन्द, येन नाळन्दा तेनुपसङ्कमिस्सामा’’ति।

नालंदा में तथागत पावारिक के आम्रवन में रहते है। यहाँ पर तथागत से मिलने के लिये सारिपुत्त आते है।

एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा सारिपुत्तो भगवन्तं एतदवोच – “एवं पसन्नो अहं, भन्ते, भगवति; न चाहु न च भविस्सति न चेतरहि विज्जति अञ्ञो समणो वा ब्राह्मणो वा भगवता भिय्योभिञ्ञतरो यदिदं सम्बोधिय’’न्ति। “उळारा खो ते अयं, सारिपुत्त, आसभी वाचा भासिता, एकंसो गहितो, सीहनादो नदितो – ‘एवंपसन्नो अहं, भन्ते, भगवति; न चाहु न च भविस्सति न चेतरहि विज्जति अञ्ञो समणो वा ब्राह्मणो वा भगवता भिय्योभिञ्ञतरो यदिदं सम्बोधिय’न्ति।

भन्ते सारिपुत्त तथागत के महानता के विषय में सिंहनाद करते है। यहाँ नालन्दा में भी तथागत भिक्षुसंघ को धम्म-देसना देते है। फिर आनंद से कहते है, चलो, पाटलिग्राम चलते है।

अथ खो भगवा नाळन्दायं यथाभिरन्तं विहरित्वा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि – “आयामानन्द, येन पाटलिगामो तेनुपसङ्कमिस्सामा’’ति।

भन्ते आनंद के साथ पाटलिग्राम पहुँचने पर वहाँ के उपासक प्रजाजन तथागत को उनके विश्राम-धाम में आमंत्रित करते है। यहाँ विश्राम-धाम में तथागत उपासक प्रजाजनों को पाँच दू:शील से होने वाली विपत्तियों के विषय में धम्म-देसना देते है। इस के पश्चात वे पाँच सत्-शील से प्राप्त होने वाली समृद्धि के विषय में धम्म-देसना देते है।

यहीं पर रहते हुए पाटलिग्राम के विषय में एक जानकारी प्राप्त होती है। वैशाली के वज्जियों से सुरक्षित रहने के हेतु, महाराजा अजातशत्रु के आदेश से उनके मंत्री सुनीध तथा वस्सकार पाटलिग्राम को विकसीत करते हुए नगर को तट-बंधन बांध रहे है।

तेन खो पन समयेन सुनिध वस्सकारा मगधमहामत्ता पाटलिगामे नगरं मापेन्ति वज्जीनं पटिबाहाय।

फिर तथागत इस उदयोन्मुख नगर के भविष्य के विषय में अपनी बात रखते है।

यावता, आनन्द, अरियं आयतनं यावता वणिप्पथो इदं अग्गनगरं भविस्सति पाटलिपुत्तं पुटभेदनं। पाटलिपुत्तस्स खो, आनन्द, तयो अन्तराया भविस्सन्ति - अग्गितो वा उदकतो वा मिथुभेदा वा''ति।

आनंद, यह नगर भविष्य में सुजनों का शहर, व्यापर का शहर होगा। लेकिन इस नगर को अग्नि, बाढ़ तथा मत-भेद से खतरा हो सकता है।

सुनीध और वस्सकार तथागत और उनके संघ को भोजन के लिये आमंत्रित करते है। भोजन के पश्चात तथागत उन्हे उपदेशित करते है।

यस्मिं पदेसे कप्पेति, वासं पण्डितजातियो।
सीलवन्तेत्थ भोजेत्वा, सञ्ञते ब्रह्मचारयो ॥
या तत्थ देवता आसुं, तासं दक्खिणमादिसे।
ता पूजिता पूजयन्ति, मानिता मानयन्ति नं॥
ततो नं अनुकम्पन्ति, माता पुत्तंव ओरसं।
देवतानुकम्पितो पोसो, सदा भद्रानि पस्सती''ति॥

यह घर बनाकर रहते हुए, पण्डितों को, शीलवन्तों को, ब्रम्हचारियोंको भोजन करवाकर, देवताओं को दक्षिणा देकर, उनका पूजन करें, वे तुम्हारा पूजन करेंगे, उनका सम्मान करें, वे तुम्हारा सम्मान करेंगे। जैसे माता को अपने दूध पिते बालक से अनुकम्पा होती है, वैसे देवताओं से अनुकम्पित होने से मानव को सब कुछ अच्छा दिखता है।

सुनीध और वस्सकार तथागत को जाते हुए देखते रहते है, और सोचते है, जिस द्वार से गौतम जायेंगे वह गौतम द्वार कहलायेगा, जिस घाट से गौतम गंगा पार करेंगे गौतम घाट कहलायेगा।

जब तथागत नदी तट पर पहुँचे तो नदी में बाढ़ आयी थी। कुछ लोग छोटी या बडी नाव खोज रहे थे, कुछ लोग बेड़ा खोज रहे थे। लेकिन तथागत और भिक्षु-संघ एक दुसरे के सशक्त बाहोंके सहारे बडी आसानी से नदीया पार कर गये। पार जाकर तथागत कहते है ...

ये तरन्ति अण्णवं सरं, सेतुं कत्वान विसज्ज पल्ललानि।
कुल्लञ्हि जनो बन्धति, तिण्णा मेधाविनो जना''ति॥

जो विद्वान होते है, सेतु बनाकर नदी की धारा का सैलाब पार कर जाते है, दल दल पिछे छोड जाते है। मगर कुछ लोग छोटी बडी नाव खोजते रह जाते है।
तथागत आनंद से कहते है, चलो अब कोटीग्राम चलते है।
कोटीग्राम पहुँचकर तथागत भिक्षुसंघ को चार आर्य सत्य समझाते है।

चतुन्नं, भिक्खवे, अरियसच्चानं अननुबोधा अप्पटिवेधा एवमिदं दीघमद्धानं सन्धावितं संसरितं ममञ्चेव तुम्हाकञ्च।
कतमेसं चतुन्नं?
दुक्खस्स, भिक्खवे, अरियसच्चस्स अननुबोधा अप्पटिवेधा एवमिदं दीघमद्धानं सन्धावितं संसरितं ममञ्चेव तुम्हाकञ्च।
दुक्खसमुदयस्स, भिक्खवे, अरियसच्चस्स अननुबोधा अप्पटिवेधा एवमिदं दीघमद्धानं सन्धावितं संसरितं ममञ्चेव तुम्हाकञ्च।
दुक्खनिरोधस्स, भिक्खवे, अरियसच्चस्स अननुबोधा अप्पटिवेधा एवमिदं दीघमद्धानं सन्धावितं संसरितं ममञ्चेव तुम्हाकञ्च।
दुक्खनिरोधगामिनिया पटिपदाय, भिक्खवे, अरियसच्चस्स अननुबोधा अप्पटिवेधा एवमिदं दीघमद्धानं सन्धावितं संसरितं ममञ्चेव तुम्हाकञ्च।
तयिदं, भिक्खवे, दुक्खं अरियसच्चं अनुबुद्धं पटिविद्धं, दुक्खसमुदयं अरियसच्चं अनुबुद्धं पटिविद्धं, दुक्खनिरोधं अरियसच्चं अनुबुद्धं पटिविद्धं, दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं अनुबुद्धं पटिविद्धं, उच्छिन्ना भवतण्हा, खीणा भवनेत्ति, नत्थिदानि पुनब्भवो’’ति।
भिक्षुगण, चार आर्य सच की जानकारी तथा इससे व्याप्त न होने के कारण आज तक मैं और आप भटकते रहे है। क्या है यह चार ?
दुक्ख, दुक्ख का कारण, दुक्ख का निवारण, दुक्ख निवारण का अष्टांग मार्ग यह है चार आर्य सत्य।
कोटीग्राम मे इच्छानुरूप रहने के पश्चात तथागत आनंद से कहते है, चलो आनंद, अब नातिका चलते है।

नातिका पहुँचने पर आनंद तथागतसे बताते है की नातिका में रहने वाले कई लोगों की मृत्यू हुई है और लोग जानना चहाते है की मरने वाले अब कहाँ हो सकते है।

तथागत कुछ लोगों के विषय में बताते है की वे कहाँ है लेकिन फिर यह कहते है की, आनंद अगर तुम हर एक मरने वाले के विषय में पुछते रहोगे तो वह कठीन होगा। बजाय इसके मैं तुम्हे धम्म का आदर्श पर्याय समझाता हुँ। जिससे युक्त होनेपर आर्यस्त्रावक स्वंय अपना भविष्य कथन कर सकेगा।

कतमो च सो, आनन्द, धम्मादासो धम्मपरियायो, येन समन्नागतो अरियसावको आकङ्खमानो अत्तनाव अत्तानं ब्याकरेय्य - ‘खीणनिरयोम्हि खीणतिरच्छानयोनि खीणपेत्तिविसयो खीणापायदुग्गतिविनिपातो, सोतापन्नोहमस्मि अविनिपातधम्मो नियतो सम्बोधिपरायणो’ति?

इधानन्द, अरियसावको बुद्धे अवेच्चप्पसादेन समन्नागतो होति

‘इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा’ति।

धम्मे अवेच्चप्पसादेन समन्नागतो होति - ‘स्वाक्खातो भगवता धम्मो सन्दिट्ठिको अकालिको एहिपस्सिको ओपनेय्यिको पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञूही’ति।

सङ्घे अवेच्चप्पसादेन समन्नागतो होति - ‘सुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, उजुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, ञायप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, सामीचिप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो यदिदं चत्तारि पुरिसयुगानि अट्ठ पुरिसपुग्गला, एस भगवतो सावकसङ्घो आहुनेय्यो पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा’ति।

अरियकन्तेहि सीलेहि समन्नागतो होति अखण्डेहि अच्छिद्देहि असबलेहि अकम्मासेहि भुजिस्सेहि विञ्ञूपसत्थेहि अपरामट्ठेहि समाधिसंवत्तनिकेहि।

अयं खो सो, आनन्द, धम्मादासो धम्मपरियायो, येन समन्नागतो अरियसावको आकङ्खमानो अत्तनाव अत्तानं ब्याकरेय्य - ‘खीणनिरयोम्हि खीणतिरच्छानयोनि खीणपेत्तिविसयो खीणापायदुग्गतिविनिपातो, सोतापन्नोहमस्मि अविनिपातधम्मो नियतो सम्बोधिपरायणो’’’ति।

आनंद, क्या है वह धर्मादर्श धर्मपर्याय ? जिसको जानकर आर्य श्रावक समझ सकेंगे की - जहाँ नर्क नही, पशु-योनि नही, प्रेत-योनि नही, दुर्गति नहीं, न गिरनेवाले बोधि के रास्तेपर आरूढ है, धम्म स्त्रोत में मग्न है, दुक्ख के स्थान से दूर है, सद्धम्म के सहारे स्वयं ही रह सकता है।

आनन्द। जो आर्य-श्रावक उसं बुद्ध के प्रति निश्चित श्रद्धासे युक्त होता है,

जो ‘दिप्यमान, योग्यता प्राप्त, नीतीपूर्ण बुद्धीमान (परमज्ञानी), विद्या तथा सदाचरण युक्त, सन्मार्ग पर चलता, लोक-श्रेष्ठ, दमनशील मानवों को राह दिखाने वाला, देवताओ और मनुष्योके उपदेशक है, वही बुद्ध है।‘

धर्म में निश्चित श्रद्धासे युक्त होता है वह - ‘भगवानका धर्म अक्षय है, वह इसी लोक का है, इसी समय का है, परिक्षण के योग्य है, करीब लाने वाला है, सुविद्य जनों को व्यक्तिगत तौर पर ज्ञात है।‘

संघ में निश्चित श्रद्धा से युक्त होता है - ‘भगवानका श्रावक संघ सुमार्ग पर चल रहा है, श्रावक-संघ सरल मार्गपर है, न्याय मार्गपर है, सम्मानयुक्त मार्गपर है, यह चार पुरुष युगल (स्रोतापन्न, सकृदागामी, अनागामी और अर्हत्) और आठ पुरुष युक्त है, यही भगवानका श्रावक संघ है, (जो कि) आवाहन करने योग्य है, मेहेमान बनाने योग्य है, दान देने योग्य है, हाथ जोडने योग्य है, और श्रेष्ठ पुण्य कारक है।’

आर्य श्रावक अखंडित, निर्दोष, निर्मल, निष्कल्मष, सेवनीय, विज्ञ - प्रशंसित, शील से युक्त होता है। आनन्द, यह धर्मादर्श है, धर्मपर्याय है।”

नातिका में इस प्रकार की देसना देते हुवे वहाँ रहने के बाद तथागत कहते है, चलो आनन्द अब वैशाली चलते है।

वैशाली नगर में तथागत आम्रपाली की बाग में रहते है। आम्रपाली उन्हें भोजन का आमंत्रण देती है। तुरंत बाद वहाँ के लिच्छवी भी भोजन का आमंत्रण देते है। लेकिन तथागत यह कहकर लिच्छवीयोंका आमंत्रण अस्वीकार करते है की उन्होने आम्रपाली का आमंत्रण स्वीकार कर लिया है, अतः वे इसमें बदलाव नहीं करेंगे।

कुछ समय वैशाली के आम्रवन में रहते हुए तथागत अपने संघ को कहते है की अब वे वैशाली की आसपास जहाँ उनकी इच्छा हो, उन्हे कोई जानता हो, तो वहीं पर वर्षावास करें। तथा आनन्द से कहते है, चलो हम वेळुवग्राम चलते है। हम वहीं पर वर्षावास करेंगे।

अगर यहाँ तथागत वर्षावास की घोषणा करते है, तो निश्चित ही यह **आषाढ़ माह** है।

अथ खो भगवतो वस्सूपगतस्स खरो आबाधो उप्पज्जि, बाळ्हा वेदना वत्तन्ति मारणन्तिका। ता सुदं भगवा सतो सम्पजानो अधिवासेसि अविहञ्ञमानो। अथ खो भगवतो एतदहोसि – "न खो मेतं पतिरूपं, य्वाहं अनामन्तेत्वा उपट्ठाके अनपलोकेत्वा भिक्खुसङ्घं परिनिब्बायेय्यं। यंनूनाहं इमं आबाधं वीरियेन पटिपणामेत्वा जीवितसङ्खारं अधिट्ठाय विहरेय्य"न्ति। अथ खो भगवा तं आबाधं वीरियेन पटिपणामेत्वा जीवितसङ्खारं अधिट्ठाय विहासि।

इस तरह वेळुवेग्राम में तथागत का अंतिम वर्षावास शूरु होता है। इस वर्षावास के दरम्यान तथागत का स्वास्थ्य बुरी तरह बिगडता है। फिर भी अपने मनोबल से तथागत वह वेदना सह जाते है। वे सोचते है की, मैं अपने शिष्यों को सब-कुछ बताएँ बिना परिनिर्वाण को प्राप्त हो जाऊँ, यह ठीक नहीं होगा। तभी वे अपनी वेदना अपने मनोबल से निष्प्रभ करते है।

अहं खो पनानन्द, एतरहि जिण्णो वुद्धो महल्लको अद्धगतो वयोअनुप्पत्तो। आसीतिको मे वयो वत्तति। सेय्यथापि, आनन्द, जज्जरसकटं वेठमिस्सकेन यापेति, एवमेव खो, आनन्द, वेठमिस्सकेन मञ्ञे तथागतस्स कायो यापेति।

अपनी पीडा से निपटने के बाद तथागत आनन्द से बाते करते है। उसी दरम्यान वे कहते है की वे अब बुढे हो गये है। उनकी उम्र अब अस्सी वर्ष हुई है।

वेसालियं पिण्डाय चरित्वा पच्छाभत्तं पिण्डपातपटिक्कन्तो आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि – ''गण्हाहि, आनन्द, निसीदनं, येन चापालं चेतियं तेनुपसङ्कमिस्साम दिवा विहाराया''ति। ''एवं, भन्ते''ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो पटिस्सुत्वा निसीदनं आदाय भगवन्तं पिट्ठितो पिट्ठितो अनुबन्धि। अथ खो भगवा येन चापालं चेतियं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। आयस्मापि खो आनन्दो भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि।

वैशाली में भोजन करने के पश्चात तथागत भन्ते आनन्द को चापाल चैत्य चलने को कहते है।

भासिता खो पनेसा, भन्ते, भगवता वाचा – 'न तावाहं, पापिम, परिनिब्बायिस्सामि, याव मे इदं ब्रह्मचरियं न इद्धं चेव भविस्सति फीतञ्च वित्थारिकं बाहुजञ्ञं पुथुभूतं याव देवमनुस्सेहि सुप्पकासित'न्ति। एतरहि खो पन, भन्ते, भगवतो ब्रह्मचरियं इद्धं चेव फीतञ्च वित्थारिकं बाहुजञ्ञं पुथुभूतं, याव देवमनुस्सेहि सुप्पकासितं। परिनिब्बातुदानि, भन्ते, भगवा, परिनिब्बातु सुगतो, परिनिब्बानकालोदानि, भन्ते, भगवतो''ति।

एवं वुत्ते भगवा मारं पापिमन्तं एतदवोच – ''अप्पोस्सुक्को त्वं, पापिम, होहि, न चिरं तथागतस्स परिनिब्बानं भविस्सति। इतो तिण्णं मासानं अच्चयेन तथागतो परिनिब्बायिस्सती''ति।

भन्ते आनन्द जैसेही तथागत के समीप से निकल कर विश्राम के लिये जाते है, **मार*** वहाँ पर आकर तथागत को प्रणाम करते है और उन्हे कहते है की, अब आप का परिनिर्वाण का समय आ गया है। आप ने जैसे कहा था की, जब आप के धम्म-मार्ग संपन्न, व्यापक तथा देव और मनुष्यों मे प्रिय होगा, तब आप

परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे। आज यह बात सफल हुई है, अतः आप का परिनिर्वाण समय आ गया है। इसपर तथागत उसे कहते है ...
हे पापी, शांत हो जाओ, तथागत अवश्य परिनिर्वाण का स्वीकार करेंगे। आज से बस तीन माह के बाद तथागत परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे।

* मार – तिपीटक साहित्य में “मार” यह एक सांकल्पनिक पात्र है, जो हमेशा ही विरोधी भुमिका निभाता है, सद्धम्म तथा सद्भावना के विरोधी रहता है।

अथ खो भगवा चापाले चेतिये सतो सम्पजानो आयुसङ्खारं ओस्सजि। ओस्सट्ठे च भगवता आयुसङ्खारे महाभूमिचालो अहोसि भिंसनको सलोमहंसो, देवदुन्दुभियो च फलिंसु। अथ खो भगवा एतमत्थं विदित्वा तायं वेलायं इमं उदानं उदानेसि -

तुलमतुलञ्च सम्भवं, भवसङ्खारमवस्सजि मुनि।
अज्झत्तरतो समाहितो, अभिन्दि कवचमिवत्तसम्भव''न्ति॥

तब चापाल चैत्य के पास, स्मृति से जागृत रहते हुए तथागत अपने जीने की इच्छा को त्याग देते है। तभी एक बड़ा भूचाल आता है। आकाश में मेघ गर्जना के साथ बिजलीयाँ चमक उठी। भगवान ने प्रशांत भाव से भव के कवच को त्याग दिया। (मेघों की गर्जना और बिजलीयाँ चमकना यह बात वर्षा ऋतु का अंत करीब होने का संकेत देती है।)

तथागत भन्ते आनंद के साथ कई महत्वपूर्ण विषय पर विमर्श करते है। और अन्त में बताते है की अभी अभी उन्हे मार ने समीप आकर परिनिर्वाण के बारे में कहा है। तथा तथागत ने भी उसे कहा है की, आज से बस तीन माह के बाद तथागत परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे।

इस बात को सुनते ही भन्ते आनन्द तथागत बुद्ध को विनंती करते है की समस्त देव व मानव जाती के हित के लिये, समस्त देव व मानव जाती के सुख के लिये, समस्त देव व मानव जाती की दया के लिये, समस्त देव व मानव जाती के भलाई के लिये, इस कल्प के अन्त तक यहीं (धरातल) पर रहे (परिनिर्वाण प्राप्त न करें)।

अथ खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि - हन्ददानि, भिक्खवे, आमन्तयामि वो, वयधम्मा सङ्खारा, अप्पमादेन सम्पादेथ। नचिरं तथागतस्स परिनिब्बानं भविस्सति। इतो तिण्णं मासानं अच्चयेन तथागतो परिनिब्बायिस्सती’’ति।

तथागत भिक्षुसंघ को संबोधित करते हुए कहते है, वक्त गुजर (बदल) रहा है, प्रमाद रहीत, जागृत होकर सामर्थ्य के साथ सामना करो। तथागत चिरकाल तक नही रहेंगे, आज से तीन माह के बाद तथागत परिनिर्वाण को प्राप्त करेंगे।

यह सब कुछ होता है, वह तथागत के अंतिम वर्षावास के समय में (वेळुवग्राम में) होता है। ऐसे ही गुजरते वक्त के साथ तथागत का वर्षावास समाप्त होता है। वर्षावास समाप्त होते ही तथागत अपनी चारिका आरंभ करने के लिये आनन्द से भण्डग्राम चलने को कहते है।

(तथागत के भविष्यवाणी तथा मार को दिये वचन के अनुसार, यहीं से तीन महीनों की अवधी शुरू होती है।)

अथ खो भगवा पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय वेसालिं पिण्डाय पाविसि। वेसालियं पिण्डाय चरित्वा पच्छाभत्तं पिण्डपातप्पटिक्कन्तो नागापलोकितं वेसालिं अपलोकेत्वा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि ‘‘इदं पच्छिमकं, आनन्द, तथागतस्स वेसालिया दस्सनं भविस्सति। आयामानन्द, येन भण्डगामो तेनुपसङ्कमिस्सामा’’ति। ‘‘एवं, भन्ते’’ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो पच्चस्सोसि।

तथागत वैशाली नगर से भिक्षा प्राप्त करते है। भोजन करने के पश्चात खडे होकर वे हाथी की तरह पूर्ण शरीर घुमाकर वैशाली को देखते हुवे कहते है की, आनन्द, तथागत वैशाली को अन्तिम समय देखते है। चलो अब भण्डग्राम चलते है। भण्डग्राम में रहते हुवे तथागत भिक्षुसंघ को उपदेश किया करते है।

सीलं समाधि पञ्ञा च, विमुत्ति च अनुत्तरा।
अनुबुद्धा इमे धम्मा, गोतमेन यसस्सिना॥

इति बुद्धो अभिञ्ञाय, धम्ममक्खासि भिक्खुनं।

दुक्खस्सन्तकरो सत्था, चक्खुमा परिनिब्बुतो''ति॥

तत्रापि सुदं भगवा भण्डगामे विहरन्तो
एतदेव बहुलं भिक्खूनं धम्मिं कथं करोति –
इति सीलं, इति समाधि, इति पञ्ञा।

तथागत यहाँ पर वैशाली नगर (तथा आसपास) अपना अंतिम वर्षावास संपन्न करते है, समाप्त करते है। अपनी चारिका शूरु करने के लिये वे आनन्द को भण्डग्राम चलने को कहते है। **इसका स्पष्ट मतलब यह है की इस समय अश्विन माह की पूर्णिमा अर्थात वर्षावास समाप्ति का दिन है। इस समय के तीन माह बाद तथागत परिनिर्वाण स्वीकार करते है।**

अथ खो भगवा भण्डगामे यथाभिरन्तं विहरित्वा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि - आयामानन्द, येन हत्थिगामो, येन अम्बगामो, येन जम्बुगामो, येन भोगनगरं तेनुपसङ्कमिस्सामा''ति। ''एवं, भन्ते''ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो पच्चस्सोसि। अथ खो भगवा महता भिक्खुसङ्घेन सद्धिं येन भोगनगरं तदवसरि।

भण्डग्राम के बाद तथागत हस्तिग्राम, अम्बग्राम, जम्बुग्राम, फिर भोगनगर जाते है। भोगनगर में रहते हुवे तथागत कहते है की, उनके उपदेश कोई अन्य भिक्खु अगर कहते है, तो उसमे सही-गलत परखने के उपाय समझाते है। तथागत इसके लिये भिक्षु-विनय को समझाकर इसकी सहायता से ऐसे उपदेश को परखने को कहते है।

अथ खो भगवा भोगनगरे यथाभिरन्तं विहरित्वा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि – ''आयामानन्द, येन पावा तेनुपसङ्कमिस्सामा''ति। ''एवं, भन्ते''ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो पच्चस्सोसि। अथ खो भगवा महता भिक्खुसङ्घेन सद्धिं येन पावा तदवसरि।

भोगनगर में कुछ समय ठहरने के बाद तथागत भन्ते आनन्द को पावा चलने को कहते है। आनन्द उन्हे पावा लेकर आते है। पावा पहुँचने पर वे चुन्द नामक लुहार

के आम्रवन में रहते है। जैसे ही चुन्द लुहार को इस बातका पता लगता है की तथागत उनके आम्रवन में ठहरे है, वह तुरन्त ही तथागत के पास पहुँचता है। तथागत उसे धम्म देसना देते है।

तत्र सुदं भगवा पावायं विहरति चुन्दस्स कम्मारपुत्तस्स अम्बवने। अस्सोसि खो चुन्दो कम्मारपुत्तो "भगवा किर पावं अनुप्पत्तो, पावायं विहरति मय्हं अम्बवने"ति। अथ खो चुन्दो कम्मारपुत्तो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो चुन्दं कम्मारपुत्तं भगवा धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि समादपेसि समुत्तेजेसि सम्पहंसेसि। अथ खो चुन्दो कम्मारपुत्तो भगवता धम्मिया कथाय सन्दस्सितो समादपितो समुत्तेजितो सम्पहंसितो भगवन्तं एतदवोच "अधिवासेतु मे, भन्ते, भगवा स्वातनाय भत्तं सद्धिं भिक्खुसङ्घेना"ति।

तथागत ने उसे जो उपदेश किया उससे प्रभावित होकर चुन्द ने उन्हे अपने घर भोजन के लिये आमंत्रित किया।

निसज्ज खो भगवा चुन्दं कम्मारपुत्तं आमन्तेसि "यं ते, चुन्द, सूकरमद्दवं पटियत्तं, तेन मं परिविस। यं पनञ्ञं खादनीयं भोजनीयं पटियत्तं, तेन भिक्खुसङ्घं परिविसा"ति। "एवं, भन्ते"ति खो चुन्दो कम्मारपुत्तो भगवतो पटिस्सुत्वा यं अहोसि सूकरमद्दवं पटियत्तं, तेन भगवन्तं परिविसि। यं पनञ्ञं खादनीयं भोजनीयं पटियत्तं, तेन भिक्खुसङ्घं परिविसि। अथ खो भगवा चुन्दं कम्मारपुत्तं आमन्तेसि "यं ते, चुन्द, सूकरमद्दवं अवसिट्ठं, तं सोब्भे निखणाहि। नाहं तं, चुन्द, पस्सामि सदेवके लोके समारके सब्रह्मके सस्समणब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय, यस्स तं परिभुत्तं सम्मा परिणामं गच्छेय्य अञ्ञत्र तथागतस्सा"ति। "एवं, भन्ते"ति खो चुन्दो कम्मारपुत्तो भगवतो पटिस्सुत्वा यं अहोसि सूकरमद्दवं अवसिट्ठं, तं सोब्भे निखणित्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो चुन्दं कम्मारपुत्तं भगवा धम्मिया कथाय सन्दस्सेत्वा समादपेत्वा समुत्तेजेत्वा सम्पहंसेत्वा उट्ठायासना पक्कामि।

दूसरे दिन तथागत चुन्द के घर भोजन के लिये पहुँचते है। तब वे चुन्द को कहते है, जो सूकर-मद्दव तुमने मेरे लिये पकाया है, वह सिर्फ मुझे ही परोसे, किसी और को ना परोसे। बाकी सभी जनों को अन्य भोजन परोसे। भोजन के पश्चात तथागत चुन्द को कहते है की, जो कुछ भी सूकर-मद्दव बचा होगा वह किसी को न परोसे बल्कि एक गढ़े में गाड दें। कोई भी - मार, ब्रम्हा, ऋषि, ब्राम्हण, देव या मानव, सिवाय तथागत के, इस सूकर-मद्दव को पचा नहीं सकते। इस पर चुन्द ने वही किया जैसे तथागत ने उसे कहा।

अथ खो भगवतो चुन्दस्स कम्मारपुत्तस्स भत्तं भुत्ताविस्स खरो आबाधो उप्पज्जि, लोहितपक्खन्दिका पबाळ्हा वेदना वत्तन्ति मारणन्तिका। ता सुदं भगवा सतो सम्पजानो अधिवासेसि अविहञ्ञमानो। अथ खो भगवा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि – “आयामानन्द, येन कुसिनारा तेनुपसङ्कमिस्सामा”ति। “एवं, भन्ते”ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो पच्चस्सोसि।

चुन्द लुहार के घर भोजन कर के जब तथागत अपने विश्राम पर पहुंचते है तो वे प्रबल बीमार होते है, उन्हे रक्त का दस्त होता है। बहुत पीडा के होते हुए भी वे अपने मनोबल से उसे सहन कर लेते है। परिस्थिति को समझते हुए वे भन्ते आनन्द को **कुसिनारा** चलने को कहते है। तथागत की बिमारी का पता चलने पर भी आनन्द उन्हे कुसिनारा ले जाने की बात मान जाते है। चलते हुए तथागत सड़क के किनारे एक वृक्ष के पास खडे होकर आनन्द से कहते है, मेरे लिये वस्त्र को चौगुना मोड़कर बिछा दो। वहाँ बैठने के पश्चात वे आनन्द को कहते है, पानी ले आये, उन्हें प्यास लगी है।

अथ खो भगवा मग्गा ओक्कम्म येन अञ्ञतरं रुक्खमूलं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि - ‘इङ्घ मे त्वं, आनन्द, चतुग्गुणं सङ्घाटिं पञ्ञपेहि, किलन्तोस्मि, आनन्द, निसीदिस्सामी”ति। “एवं, भन्ते”ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो पटिस्सुत्वा चतुग्गुणं सङ्घाटिं पञ्ञपेसि। निसीदि भगवा पञ्ञत्ते आसने। निसज्ज खो भगवा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि - ‘इङ्घ मे त्वं, आनन्द, पानीयं आहर, पिपासितोस्मि, आनन्द, पिविस्सामी”ति। एवं वुत्ते आयस्मा आनन्दो भगवन्तं

एतदवोच - 'इदानि, भन्ते, पञ्चमत्तानि सकटसतानि अतिक्कन्तानि, तं चक्कच्छिन्नं उदकं परित्तं लुळितं आविलं सन्दति। अयं, भन्ते, ककुधा नदी अविदूरे अच्छोदका सातोदका सीतोदका सेतोदका सुप्पतित्था रमणीया। एत्थ भगवा पानीयञ्च पिविस्सति, गत्तानि च सीती करिस्सती'ति।

भन्ते आनन्द उन्हे कहते है की अभी अभी बहुत गाडीयाँ नदी लांघकर गयी है, अतः नदीका पानी मंथन के कारण अस्वच्छ हुवा है। कुकुत्था नदी यहाँ से दूर नहीं है। वहाँ पहुँचकर तथागत पानी पीये और अपने तन को शांत करें। तथागत के तीन बार कहने पर भन्ते आनन्द पानी का पात्र लेकर नदी के किनारे जाते है। भन्ते आनन्द वहाँ जाकर नदीके जल को देखकर अचंभित हो जाते है। नदी का जल स्वच्छ, शीतल होता है। जल लेकर आते है और वह स्वच्छ शीतल जल तथागत को देते है।

शांत तथा अविचल रहना ही हर अनिष्ट, अमंगल के दूरीकरण का योग्य मार्ग है। कुछ शांत और अविचल समय के गुजरते ही हर अनिष्ट तथा हर अमंगल सामान्य हो जाता है। यही बात तथागत ने आनंद को (अर्थात समस्त मानव जाती को) इस दृष्टांत के माध्यम से समझायी है।

तभी वहाँ से आलार कालामा के शिष्य पुक्कुस नाम के एक मल्ल, पावा से कुसिनारा जाने वाले रास्ते से गुजरते है।

कई गाडीयाँ आवाज करते हुए वहाँ से गुजर गई फिर भी तथागत वहाँ शांत बैठे हुवे देखकर पुक्कुस मल्ल को आलार कालामा की याद आती है, और वे तथागत को आलार कालामा की बात कहते है की वे भी कभी ऐसे ही वृक्ष के पास बैठे थे और कई गाडीयाँ वहाँ से गुजरी थी। उन गाडीयों की आवाज आलार कालामा की शांति भंग न कर सकी थी।

तथागत उसे एक और बात बताते है। एक बार वे अपनी कुटिया में बैठे हुवे थे और बाहर थोडे ही अंतराल पर एक किसान और उसके बैल खेत में काम कर रहे थे। तभी उनपर बडी गडगडाहट और प्रखर प्रकाश के साथ बिजली आ गिरी। सभी का देहांत हुवा। जबतक की ग्राम वासी वहाँ पहुँचकर उनसे पुछ-ताछ किये, तब तक उन्हें किसी बात का पता न चला था। प्रवज्जित होकर भव-पार जाने पर व्यक्ति पूर्ण रूपसे अविचल हो जाता है।

अथ खो पुक्कुसो मल्लपुत्तो अञ्ञतरं पुरिसं आमन्तेसि – “इङ्घ मे त्वं, भणे, सिङ्गीवण्णं युगमट्ठं धारणीयं आहरा”ति। “एवं, भन्ते”ति खो सो पुरिसो पुक्कुसस्स मल्लपुत्तस्स पटिस्सुत्वा तं सिङ्गीवण्णं युगमट्ठं धारणीयं आहरि। अथ खो पुक्कुसो मल्लपुत्तो तं सिङ्गीवण्णं युगमट्ठं धारणीयं भगवतो उपनामेसि – “इदं, भन्ते, सिङ्गीवण्णं युगमट्ठं धारणीयं, तं मे भगवा पटिग्गण्हातु अनुकम्पं उपादाया”ति। “तेन हि, पुक्कुस, एकेन मं अच्छादेहि, एकेन आनन्द”न्ति। “एवं, भन्ते”ति खो पुक्कुसो मल्लपुत्तो भगवतो पटिस्सुत्वा एकेन भगवन्तं अच्छादेति, एकेन आयस्मन्तं आनन्दं।

पुक्कुस किसी को कहकर दो सुनहरे* रंग के चीवर मंगवाते है। तथागत उन्हे कहते है की एक उन्हे पहनने दे तथा दूसरा आनन्द को पहनने दे।

पुक्कुस के जाने के कुछ देर बाद आनन्द एक सुनहरा* चीवर तथागत को पहनाते है। तुरंत ही आनन्द तथागत के शरीर को देखकर अचंभित होते है, और कहते है, तथागत की काया कितनी ही तेजस्वी हो उठी है की, चीवर का सुनहरा* रंग भी फिका हो गया है।

* यहाँ पर मैने चीवर का रंग सुनहरा लिखा है, लेकिन यह रंग सिंह-वर्ण होना चाहीये, ऐसे मुझे लगता है।

अथ खो आयस्मा आनन्दो अचिरपक्कन्ते पुक्कुसे मल्लपुत्ते तं सिङ्गीवण्णं युगमट्ठं धारणीयं भगवतो कायं उपनामेसि। तं भगवतो कायं उपनामितं हतच्चिकं विय खायति। अथ खो आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच “अच्छरियं, भन्ते, अब्भुतं, भन्ते, याव परिसुद्धो, भन्ते, तथागतस्स छविवण्णो परियोदातो। इदं, भन्ते, सिङ्गीवण्णं युगमट्ठं धारणीयं भगवतो कायं उपनामितं हतच्चिकं विय खायती”ति। “एवमेतं, आनन्द, एवमेतं, आनन्द द्वीसु कालेसु अतिविय तथागतस्स कायो परिसुद्धो होति छविवण्णो परियोदातो। कतमेसु द्वीसु? यञ्च, आनन्द, रत्तिं तथागतो अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुज्झति, यञ्च रत्तिं अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बायति। इमेसु खो, आनन्द, द्वीसु कालेसु अतिविय तथागतस्स कायो परिसुद्धो

होति छविवण्णो परियोदातो। ‘‘अज्ज खो, पनानन्द, रत्तिया पच्छिमे यामे कुसिनारायं उपवत्तने मल्लानं सालवने अन्तरेन यमकसालानं तथागतस्स परिनिब्बानं भविस्सति। आयामानन्द, येन ककुधा नदी तेनुपसङ्कमिस्सामा’’ति।

भगवंत आनन्द को कहते है की तथागत की काया दो बार ऐसे तेजस्वी होती है। पहली बार जब उन्हे (गया में पिपल के वृक्ष के नीचे बैठे हुवे) बोधि प्राप्ति हुई थी, और अब दूसरी बार क्यों की, आनन्द, आज रात्रि के उत्तर प्रहर में, मल्लों के शाल वन में, दो शाल वृक्षों के बीच में तथागत परिनिर्वाण प्राप्त करेंगे। चलो आनन्द, हम अब हम कुकुत्था नदी के पास चलते है।

अथ खो भगवा महता भिक्खुसङ्घेन सद्धिं येन ककुधा नदी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा ककुधं नदिं अज्झोगाहेत्वा न्हत्वा च पिवित्वा च पच्चुत्तरित्वा येन अम्बवनं तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं चुन्दकं आमन्तेसि ‘‘इङ्घ मे त्वं, चुन्दक, चतुग्गुणं सङ्घाटिं पञ्ञपेहि, किलन्तोस्मि, चुन्दक, निपज्जिस्सामी’’ति।

‘‘एवं, भन्ते’’ति खो आयस्मा चुन्दको भगवतो पटिस्सुत्वा चतुग्गुणं सङ्घाटिं पञ्ञपेसि। अथ खो भगवा दक्खिणेन पस्सेन सीहसेय्यं कप्पेसि पादे पादं अच्चाधाय सतो सम्पजानो उट्ठानसञ्ञं मनसिकरित्वा। आयस्मा पन चुन्दको तत्थेव भगवतो पुरतो निसीदि।

भिक्खु संघ के साथ तथागत बुद्ध कुकुत्था नदी पर पहुँचते है। वे नदी की धारा में जाकर स्नान करते है, पानी पीते है और नजदीकी आम्रवन में आते है। फिर चुन्दक नामक शिष्य को पुकार कर उसे वस्त्र को चौगुना मोडकर बिछाने को कहते है। चुन्दक तथागत के लिये शय्या बिछाते है। तथागत उस शय्यापर अपनी दाहीनी भुजापर सिंहशय्या में, एक पैर पर दुसरा पैर रखकर लेटते है।

अथ खो भगवा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि ‘‘सिया खो, पनानन्द, चुन्दस्स कम्मारपुत्तस्स कोचि विप्पटिसारं उप्पादेय्य ‘तस्स ते, आवुसो चुन्द, अलाभा तस्स ते दुल्लद्धं, यस्स ते तथागतो पच्छिमं पिण्डपातं परिभुञ्जित्वा परिनिब्बुतो’ति। चुन्दस्स,

आनन्द, कम्मारपुत्तस्स एवं विप्पटिसारो पटिविनेतब्बो 'तस्स ते, आवुसो चुन्द, लाभा तस्स ते सुलद्धं, यस्स ते तथागतो पच्छिमं पिण्डपातं परिभुञ्जित्वा परिनिब्बुतो। सम्मुखा मेतं, आवुसो चुन्द, भगवतो सुतं सम्मुखा पटिग्गहितं - द्वे मे पिण्डपाता समसमफला समविपाका, अतिविय अञ्ञेहि पिण्डपातेहि महप्फलतरा च महानिसंसतरा च। कतमे द्वे? यञ्च पिण्डपातं परिभुञ्जित्वा तथागतो अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुज्झति, यञ्च पिण्डपातं परिभुञ्जित्वा तथागतो अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बायति।

तथागत आनन्दको पास बुलाकर कहते है, की अब लुहार चुन्द को यह नहीं कहना की, तुमसे पाप हुवा है, तुम्हारा दूर्भाग्य है की तुमने दिया हुवा भोजन खाकर तथागत को परिनिर्वाण प्राप्त हुवा। चुन्द को कहो की तुम बडे भाग्यशाली हो। वह दो भोजन-दान सबसे अधिक पुण्य देते है। एक जब तथागत भोजन-दान स्वीकार कर खाते है, और उन्हे बोधि प्राप्ति होती है। दूसरा वह भोजन-दान जिसे खाकर तथागत परिनिर्वाण को प्राप्त होते है।

अथ खो भगवा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि – "आयामानन्द, येन हिरञ्ञवतिया नदिया पारिमं तीरं, येन कुसिनारा उपवत्तनं मल्लानं सालवनं तेनुपसङ्कमिस्सामा"ति। "एवं, भन्ते"ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो पच्चस्सोसि। अथ खो भगवा महता भिक्खुसङ्घेन सद्धिं येन हिरञ्ञवतिया नदिया पारिमं तीरं, येन कुसिनारा उपवत्तनं मल्लानं सालवनं तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि "इङ्घ मे त्वं, आनन्द, अन्तरेन यमकसालानं उत्तरसीसकं मञ्चकं पञ्ञपेहि, किलन्तोस्मि, आनन्द, निपज्जिस्सामी"ति। "एवं, भन्ते"ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो पटिस्सुत्वा अन्तरेन यमकसालानं उत्तरसीसकं मञ्चकं पञ्ञपेसि। अथ खो भगवा दक्खिणेन पस्सेन सीहसेय्यं कप्पेसि पादे पादं अच्चाधाय सतो सम्पजानो।

भगवंत आनन्द को कहते है, चलो हिरण्यवती नदी के पार चलते है, जहाँ मल्लों का शाल वृक्षों का उपवन है। वहाँ पहुँचने पर वे आनन्द को कहते है की मैं बहुत थक गया हुँ, उत्तर की ओर सिरहाना किये हुवे मंचक शय्या बिछा दो, मुझे लेटना

है। तथागत उस शय्यापर अपनी दाहीनी भुजापर सिंहशय्या में, एक पैर पर दुसरा पैर रखकर लेटते है।

तेन खो पन समयेन यमकसाला सब्बफालिफुल्ला होन्ति अकालपुप्फेहि। ते तथागतस्स सरीरं ओकिरन्ति अज्झोकिरन्ति अभिप्पकिरन्ति तथागतस्स पूजाय। दिब्बानिपि मन्दारवपुप्फानि अन्तलिक्खा पपतन्ति, तानि तथागतस्स सरीरं ओकिरन्ति अज्झोकिरन्ति अभिप्पकिरन्ति तथागतस्स पूजाय।

उस समय उन दो शाल वृक्षों को असमयही (फूलने का समय न होते हुए) फूल लगे थे और यह फूल तथागत के शरीर पर बिखर रहे थे, जैसे शाल वृक्ष तथागत की पुजा कर रहे थे। आकाश से भी तथागत के शरीर पर दिव्य फूलों की वृष्टी हो रही थी।

अथ खो भगवा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि – ‘‘सब्बफालिफुल्ला खो, आनन्द, यमकसाला अकालपुप्फेहि। ते तथागतस्स सरीरं ओकिरन्ति अज्झोकिरन्ति अभिप्पकिरन्ति तथागतस्स पूजाय। दिब्बानिपि मन्दारवपुप्फानि अन्तलिक्खा पपतन्ति, तानि तथागतस्स सरीरं ओकिरन्ति अज्झोकिरन्ति अभिप्पकिरन्ति तथागतस्स पूजाय। दिब्बानिपि चन्दनचुण्णानि अन्तलिक्खा पपतन्ति, तानि तथागतस्स सरीरं ओकिरन्ति अज्झोकिरन्ति अभिप्पकिरन्ति तथागतस्स पूजाय। दिब्बानिपि तूरियानि अन्तलिक्खे वज्जन्ति तथागतस्स पूजाय। दिब्बानिपि सङ्गीतानि अन्तलिक्खे वत्तन्ति तथागतस्स पूजाय।

तथागत आनन्द को पुकारकर कहते है, देखो, यह जोडे शाल वृक्ष असमय ही फूले है और तथागत के शरीर पर फूल बिखेर रहे है, तथागत की पूजा कर रहे है, तथागत का सम्मान कर रहे है। आकाश से भी दिव्य फूलों की वृष्टी तथागत के पूजा तथा सम्मान में हो रही है। आकाश से चन्दन के सुगन्धि चूर्ण की बौछार हो रही है। तथागत के सम्मान में आकाश में शहनाइयाँ बज रही है।

न खो, आनन्द, एत्तावता तथागतो सक्कतो वा होति गरुकतो वा मानितो वा पूजितो वा अपचितो वा। यो खो, आनन्द, भिक्खु वा भिक्खुनी वा उपासको वा उपासिका वा धम्मानुधम्मप्पटिपन्नो विहरति सामीचिप्पटिपन्नो अनुधम्मचारी, सो तथागतं सक्करोति गरुं करोति मानेति पूजेति अपचियति, परमाय पूजाय। तस्मातिहानन्द, धम्मानुधम्मप्पटिपन्ना विहरिस्साम सामीचिप्पटिपन्ना अनुधम्मचारिनोति। एवञ्हि वो, आनन्द, सिक्खितब्ब’’न्ति।

लेकिन आनन्द, तथागत की पुजा और सम्मान इस तरह से **नहीं होता है।**

जो भिक्खु, भिक्खुनी या उपासक, उपासिका धम्म में विरत होता है, धम्म की राह पर चलता है, सम्यक धम्म-आचरण करता है तो, यही मेरी शिक्षा है, यही मेरी पुजा (यही मेरा सम्मान) है।

‘चत्तारिमानि, आनन्द, सद्धस्स कुलपुत्तस्स दस्सनीयानि संवेजनीयानि ठानानि। कतमानि चत्तारि? ‘इध तथागतो जातो’ति, आनन्द, सद्धस्स कुलपुत्तस्स दस्सनीयं संवेजनीयं ठानं। ‘इध तथागतो अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो’ति, आनन्द, सद्धस्स कुलपुत्तस्स दस्सनीयं संवेजनीयं ठानं। ‘इध तथागतेन अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तित’न्ति, आनन्द, सद्धस्स कुलपुत्तस्स दस्सनीयं संवेजनीयं ठानं। ‘इध तथागतो अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बुतो’ति, आनन्द, सद्धस्स कुलपुत्तस्स दस्सनीयं संवेजनीयं ठानं। इमानि खो, आनन्द, चत्तारि सद्धस्स कुलपुत्तस्स दस्सनीयानि संवेजनीयानि ठानानि।

तथागत भन्ते आनन्द को कहते है, श्रद्धावान उपासकों को इन चार स्थानों पर प्रेरणा मिलती है। कौन से चार स्थान ?

जहाँ तथागत का जन्म हुवा है, जहाँ तथागत को बोधि प्राप्त हुई है, जहाँ तथागत ने परमोच्च धम्म चक्र का प्रवर्तन किया है, तथा जहाँ तथागत को परिनिर्वाण प्राप्त हुवा है, आनंन्द, यह चार स्थान श्रद्धावान, कुल वान उपासकों के लिये प्रेरणा दायी होते है।

यह चार स्थान आज के लुंबिनी वन, बोधगया, मृगदाय वन अर्थात सारनाथ और कुसीनारा अर्थात कुशीनगर है।

इस के बाद जो कुछ भी होता है, यही दो शाल वृक्षों के बीच में होता है। तथागत अपनी अंतिम सिंह-शय्या में लेटे हुवे संघ के सभी भिक्खुओं को बात करते है। आनन्द से बाते करते है।

सुभद्र नाम के एक परिव्राजक तथागत से मिलने आते है लेकिन आनन्द तथागत बहुत पीडा में होने के कारण उन्हे अनुमति नहीं देते है। सुभद्र के बार बार बिनती करने पर तथागत सुनते है और आनन्द से कहते है, सुभद्र को मुझे मिलने से मत रोको। तथागत सुभद्र से कई ज्ञान की बाते करते है। बातो ही बातों में वे उसे बताते है ....

एकूनतिंसो वयसा सुभद्द, यं पब्बजिं किंकुसलानुएसी।
वस्सानि पञ्ञास समाधिकानि, यतो अहं पब्बजितो सुभद्द॥

सुभद्र, मेरी उम्र के उनत्तीसवे वे वर्ष में मैं जीवन की सर्वोत्तम राह की खोज में निकला था। अब पचास वर्ष पूर्ण होते है, मैं इस राह पर चल रहा हुँ। अर्थात तथागत की उम्र अब अस्सी वर्ष की है।

भिक्खुओं का महिलाओं से कैसे व्यवहार होना चाहिये यह बताते है।

“कथं पन, भन्ते, तथागतस्स सरीरे पटिपज्जितब्ब”न्ति? “यथा खो, आनन्द, रञ्ञो चक्कवत्तिस्स सरीरे पटिपज्जन्ति, एवं तथागतस्स सरीरे पटिपज्जितब्ब”न्ति। “कथं पन, भन्ते, रञ्ञो चक्कवत्तिस्स सरीरे पटिपज्जन्ती”ति? “रञ्ञो, आनन्द, चक्कवत्तिस्स सरीरं अहतेन वत्थेन वेठेन्ति, अहतेन वत्थेन वेठेत्वा विहतेन कप्पासेन वेठेन्ति, विहतेन कप्पासेन वेठेत्वा अहतेन वत्थेन वेठेन्ति। एतेनुपायेन पञ्चहि युगसतेहि रञ्ञो चक्कवत्तिस्स सरीरं वेठेत्वा आयसाय तेलदोणिया पक्खिपित्वा अञ्ञिस्सा आयसाय दोणिया पटिकुज्जित्वा सब्बगन्धानं चितकं करित्वा रञ्ञो चक्कवत्तिस्स सरीरं झापेन्ति। चातुमहापथे रञ्ञो चक्कवत्तिस्स थूपं करोन्ति। एवं

खो, आनन्द, रञ्ञो चक्कवत्तिस्स सरीरे पटिपज्जन्ति। यथा खो, आनन्द, रञ्ञो चक्कवत्तिस्स सरीरे पटिपज्जन्ति, एवं तथागतस्स सरीरे पटिपज्जितब्बं। चातुमहापथे तथागतस्स थूपो कातब्बो। तत्थ ये मालं वा गन्धं वा चुण्णकं वा आरोपेस्सन्ति वा अभिवादेस्सन्ति वा चित्तं वा पसादेस्सन्ति तेसं तं भविस्सति दीघरत्तं हिताय सुखाय।

जब भन्ते आनन्द उन्हे पुछते है की उनके परिनिर्वाण के बाद उनके पार्थिव पर कैसे व्यवहार किये जाय, तब तथागत उन्हे बताते है की जैसा व्यवहार एक चक्रवर्ती सम्राट के पार्थिव से किया जाता है, वैसा ही व्यवहार तथागत के पार्थिव के साथ हो। तथागत के शरीर-दहन के पश्चात उनके देह-धातु पर स्तुप बनवाये जाय।

आनन्द बहुत दूखी होते है और कुछ दूर पेड़ के पिछे जाकर रो देते है। कोई भिक्खु यह समाचार तथागत को देते है। तथागत उन्हे कहते है की मेरा हवाला देकर भन्ते आनन्द को यहाँ बुलाओ। आनन्द के आने पर तथागत स्वयं आनन्द की सांत्वना करते है। सारे भिक्खु संघ के सामने आनन्द के गुणों की सराहना करते है।
और .... इसी रात्रि के अंतिम प्रहर में तथागत का महापरिनिर्वाण होता है।

*****

जब तथागत और आनन्द कुसिनारा में पहुँचते है, तथागत दो शाल वृक्ष के समीप अपनी शय्या पर लेटते है, और उनके शरीर पर शाल वृक्ष के फुल बिखेरते है, इस प्रसंग के बाद, आखरी चरण में, मेरा यह लेखन कुछ कुछ संक्षिप्त किया है। अगर वाचक चाहते है तो इसका अगला चरण विस्तारसे कहीं अन्य पुस्तक में पढ़ सकते है। मगर मेरे इस दीर्घ लेखन के कुछ विशेष उद्देश्य है, जो यहाँ तक के अंतराल में सफल होते है।

तथागत ने अपनी अंतिम घडीयाँ गुजारते हुवे अपना अंतिम उपदेश दिया है। बुद्ध, धम्म, संघ के सही अर्थ बतलाये है। चार आर्य सत्य तथा अष्टांग मार्ग को पुनश्च दृढ़तासे कहा है।

शांत तथा अविचल समय ही हर अनिष्ट, अमंगल के दूरीकरण का योग्य मार्ग है। कुछ शांत और अविचल समय के गुजरते ही हर अनिष्ट तथा हर अमंगल सामान्य हो जाता है। यही बात तथागत ने समस्त मानव जाती को एक दृष्टांत के माध्यम से समझायी है।

तथागत की पुजा न फूलों से, न सुगन्ध से होती है, लेकिन उनके दिखलाये मार्ग पर दृढ़ता से चलने से ही उनकी पुजा तथा उनका सम्मान होता है। यही बात से विपरीत व्यवहार जो आज होता हुवा हम देखते है।

और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है की, तथागत ने अपना अंतिम वर्षावास संपन्न होते-होते, वैशाली नगर से करीब, चापाल चैत्य के पास मार को यह वचन दिया की आज से तीन माह के बाद मैं परिनिर्वाण स्वीकार करुंगा। अगर यह वर्षा ऋतु का अंतिम चरण (वर्षावास समाप्ति) है तो यह **अश्विन मास** होगा। फिर मार के जाने के बाद वे अपनी जीने की आसक्ति त्याग देते है, प्रशांत भाव से भव के कवच को त्याग देते है। कुछ ही समय बाद वे आनन्द को भी इस वास्तविकता से अवगत करते है। भिक्खु संघ को भी बताते है की अब से तीन माह के बाद मैं परिनिर्वाण स्वीकार करूंगा। अगर यह सब कुछ अश्विन माह के अंत में हो रहा है तो तीन माह ...
अश्विन पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा,
मगासर पूर्णिमा से पौष पूर्णिमा और
पौष पूर्णिमा से माघ पूर्णिमा .... इस तरह बीते होंगे।
अर्थात माघ माह के **उत्तरार्ध** में या **माघ पूर्णिमा बाद** के करीबी दिनों में **तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण** हुवा था, यह बात **तिपीटक** की साक्ष्य से सिद्ध होती है। माघ माह के मध्य से उत्तरार्ध तक, ५०० ईसा पूर्व के समय अनुसार, यह समय ईसाई कालगणन के साथ जोडा जाय तो वह फरवरी महिने के पूर्वार्ध से मध्य तक होता है। इसी कारण **दक्षिण-पूर्व आशियायी लोग फरवरी की सात-आठ दिनांक से पंद्रह दिनांक तक किसी दिन परिनिर्वाण दिवस मानते है, मनाते है।** इन दिनों में विहारों में सार्वजनिक रुप से महापरिनिर्वाण सुत्त का पठन होता है। घरो-घरों में तथागत के साथ-साथ में अपने परिवार के निर्वाण प्राप्त परिजनों को याद किया जाता है, तथा इस स्मृति में तथागत की वंदना की जाती है।

यह संशोधन केवल तिपीटक के महापरिनिब्बान सुत्त के सूक्ष्म वाचन पर निर्भर रहा है। इस में कोई अन्य संदर्भ नहीं है। इस संशोधन से तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण वैशाख पूर्णिमा की रात को हुवा था यह बात मनगढ़त है, यह स्पष्ट होता है, तथा तथागत कोई दैवी व्यक्तित्व न होकर मानव तत्त्ववेत्ता थे, यह बात दृढ़ता से स्पष्ट होती है।

आईये, तथागत बुद्ध ने दिखलाये मार्ग पर सच्चे वचन से चलते हुवे उनको वंदन करते है .....

।। नत्थि मे सरणं अंञं, बुद्धो मे सरणं वरं,
एतेन सच्च वज्जेन होतु मे जयमंगलं ।।

सुबह के समय महापरिनिर्वाण स्तुप, कुशीनगर का छायाचित्र